अधिसूचना संख्या: 540/2023 **अधिसूचना तिथि:** 23-06-2023

शोधार्थी: शिल्पी सिंह

शोध निर्देशक: प्रो. नीरज कुमार

विभाग: हिन्दी विभाग, मानविकी एवं भाषा संकाय, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली - **110025**

विषय: केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं में निहित प्रगतिशील सौन्दर्य मूल्यों का अध्ययन

बीज शब्द

1. सौन्दर्य मूल्य
2. प्रगतिशील चेतना
3. मार्क्सवाद
4. श्रम सौन्दर्य
5. नारी सौन्दर्य

शोधार्थी की स्थापनाएँ

- प्राचीन भारतीय वाङ्मय में सौन्दर्य की परिकल्पना 'परम सत्य' के साथ जोड़कर देखी गयी है, उसी परम सत्य की खोज यात्रा में ही सौन्दर्य की विभिन्न अवधारणाएं प्रस्तुत की गई थीं |
- रसानुभूति एवं सौन्दर्यानुभूति दोनों ही व्यक्ति को आनन्द की अवस्था में ले जाते हैं | दोनों में मूलभूत अंतर यह है कि जहाँ सौन्दर्यानुभूति में ज्ञाता और ज्ञेय का भेद बना रहता है, रसानुभूति में यह भेद समाप्त हो जाता है तथा ज्ञाता और ज्ञेय के मध्य अद्वैत की स्थिति आ जाती है |
- केदारनाथ अग्रवाल तत्कालीन सम-सामयिक सामाजिक परिवेश को अपनी कविता का आधार बनाते हैं | सामाजिक संघर्ष के द्वंद्व को अपनी कविताओं के माध्यम से रूपायित भी करते हैं |
- केदार की कविताएं प्रमुखत: श्रम सौन्दर्य को अभिलक्षित करती है | उनकी कविताओं में यथास्थिति को बदलने का संदेश मिलता है |
- केदारनाथ अग्रवाल में सौन्दर्य की परिकल्पना को आम जनता, किसान और मजदूर की मेहनत से जोड़कर देखने का अद्भुत रचना कौशल है | केदार का काव्य सौन्दर्य, श्रम और संघर्ष का काव्य सौन्दर्य है | वे जीवन-रस से पगे कवि हैं | वे मनुष्य को जीवन से भागने के बजाय, जीवन से संघर्ष करने की प्रेरणा देते हैं |

- प्रकृति के मानवीकरण में केदारनाथ अग्रवाल को महारत हासिल है |
- केदार ने नारी के सौन्दर्य को नख-शिख में न देखकर संघर्षशील मानवी-रूप में देखा है | उनकी कविताओं में सुखद दाम्पत्य जीवन को भी निरूपित करने का एक ईमानदार प्रयास दिखता है |
- केदारनाथ अग्रवाल का काव्य-शिल्प प्रगतिशील चेतना का सशक्त प्रतिमान है | उनकी रचनाओं में आम जन मानस की बोली का प्रमुखता से प्रयोग हुआ है | देशज एवं स्थानीय शब्द उनकी कविता में रचनात्मक रूप ग्रहण करते हैं |
- मनुष्य को जीवनपथ पर अग्रसर रहते हुए, संघर्ष की प्रेरणा देने वाली केदार जी की कविताएँ कालजयी हैं | तथा वर्तमान समाज में भी उनकी प्रासंगिकता एक प्रकाश पुंज की ही तरह है |

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध प्रबंध में केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं में प्रगतिशील सौन्दर्य मूल्यों का विवेचन और विश्लेषण किया गया है | सौन्दर्य मूलत: आत्मगत होता है | यह आत्मगतता सामूहिक होती है, क्योंकि कोई शब्द अथवा भाषा किसी की व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं होती है | सौन्दर्य सामाजिक चित्त का विषय है | सौन्दर्य एक सतत विकासशील अवधारणा होती है | सौन्दर्य का सम्बन्ध न केवल वस्तु से होता है, अपितु विषयी (दृष्टि) से भी होता है क्योंकि सौन्दर्यानुभूति विषयी के संस्कार अथवा स्वभाव से जुड़ी होती है | सौन्दर्य में उपयोग और आनन्द की स्थितियों का द्वंद्व आवश्यक रूप से निहित होता है | जिस प्रकार सौन्दर्य वस्तु और दृष्टा के सापेक्ष होता है, उसी प्रकार कलाजन्य सौन्दर्य भी वस्तु-सापेक्ष होता है |

प्रगतिशील शब्द मानवीय जीवन में गत्यात्मकता तथा उत्थान से जुड़ा हुआ है | प्रगतिशील कविता का सम्बन्ध जन साधारण को जीवन पथ में आगे बढ़ने की प्रेरणा देने से जुड़ा हुआ है | केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं में जनजीवन और जनता के प्रति प्रेम दिखाई देता है | केदार का कवि कर्म हमेशा इस तथ्य के प्रति सजग रहता है कि वे किसके लिये लिख रहे हैं, क्यों लिख रहे हैं | उनकी कविताएँ रागधर्म के साथ ही जीवनधर्म के सौन्दर्य को रूपायित करती हैं |

केदार की कविताओं में श्रम विविध रूपों में देखने को मिलता है | जहाँ-कहीं भी शोषित प्रताड़ित मनुष्य है, वहीं केदार की कविता मौजूद है | केदार की कविताएँ मूलत: श्रम सौन्दर्य की कविताएँ हैं | केदार की कविता में न केवल सामाजिक परिवेश का वर्णन मिलता है, अपितु राष्ट्रीय समस्याओं का चित्रण भी मिलता है | केदार समाज को समानता के आधार पर विकसित होते हुए देखना चाहते हैं |

केदार की कविता में प्रकृति के चित्र मानवीय संवेदना के साथ उभरकर सामने आते हैं | केन नदी का प्रेमी कभी कवि पहाड़ रूप में है तो कभी बादल रूप में है, तो वह बाँदा शहर की बहू भी है | केदार के जीवन-व्यक्तित्व की यह विशेषता है कि उन्होंने जिससे भी प्यार किया, जिसको भी अपनाया, उसके साथ मरते दम तक जुड़े रहे, और यह जुड़ाव उनकी कविताओं एवं रचना-कर्म में भी परिलक्षित होता है | प्रेम किया पार्वती (पत्नी) से – दाम्पत्य कविताओं का एक अतुलनीय संचयन दे दिया, जीवन भर रहे अपने गृह नगर बाँदा में – शहर के प्राकृतिक उपमानों को मानवीकरण कर दिया, दोस्ती की डॉ० रामविलास शर्मा से – हिन्दी साहित्य में अन्यत्र दुर्लभ पत्र व्यवहार कर गये | केदार जी की भाषा के कारण ही उनकी कविताएँ हमको अपनी निजी और आत्मीय लगने लगती हैं | केदार जी की कविताओं का भाषिक सौंदर्य उतना ही सुन्दर है, जितना कि ताजमहल का शिल्पगत सौन्दर्य | केदार अपनी कविताओं में इतना रस भर देते है कि वह कविता से झरने की तरह निकलने लगता है |